१.३.५ स्थापित पाठ्यक्रम में इतिहास, भौतिकी, गणितीय विज्ञान, राजनीति विज्ञान, शिक्षा, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, मानव व्यवहार, अर्थशास्त्र, प्रबंधन, कंप्यूटर विज्ञान और अनुप्रयोगों जैसे आधुनिक विषयों के साथ-साथ संस्कृत ज्ञान परंपरा में उपलब्ध संबंधित तथ्यों का समावेश हैं। इसके अतिरिक्त इन अनुच्छेदों को संस्कृत में पढ़ाया जा रहा है। आधुनिक संस्कृत साहित्य को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

- विश्वविद्यालय के अन्तर्गत विज्ञान का पाठयक्रम अनिवार्य रूप से शास्त्री कक्षा में निर्धारित है । पारम्परिक पाठ्यक्रमों में शास्त्री स्तर पर स्मृति ग्रंथ मनुस्मृति, एवं आचार्य स्तर परआचारशुद्धि , इत्यादि ग्रन्थ व्यवहार को बढ़ावा देने वाली नैतिकता से संबंधित पाठ्यपुस्तकें संस्कृत साहित्य पाठ्यक्रम में शिशुपालवध, अभिज्ञान शाकुंतल और भतृहरि जैसे पाठ्यांशों का ऐतिहासिक वैशिष्ट्य निहित है। अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में निर्धारित कौटिलीय अर्थशास्त्र में भारतीय प्राचीन इतिहास साहित्य के शिवराजदत्तविजय, महाभारत में एंतिहासिक कालखण्ड से विकासक्रम में भारत की तत्कालीन स्थिति का निरूपण प्राप्त होता है ।
- संस्कृत ज्ञान परंपरा में परमाणु की दार्शनिक प्रकृति को वैज्ञानिक रूप से न्यायदर्शन के शास्त्री प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम न्यायमंजरी गन्थ में प्रतिपादित किया गया है। सिद्धान्त ज्योतिष में, छात्रों को शास्त्री कक्षा में पाठ्यक्रम में ज्योतिष में खगोलीय और भौगोलिक विषय पढ़ाए जाते हैं। पारम्परिक विषयों में शास्त्री एवं आचार्य स्तर पर वास्तुशास्त्र में प्राचीन नियमों के अनुसार तकनीकी दृष्टिकोण से नगर निर्माण, गृहनिर्माण , देवालय निर्माण तथा प्राकृतिक ऊर्जाओं के समावेशन के सभी पक्षों को बृहद्वास्तुमाला और समरांगणसूत्रधार में समझाया गया है, जो कि आचार्य स्तर पर अध्ययन के लिए निर्धारित है। ज्योतिष के पाठ्यक्रम में आचार्य प्रथम वर्ष में तृतीय व चतुर्थ होता है, जिसमें भूविज्ञान, जीव विज्ञान, धातु, रसायन विज्ञान, आदि विषयों का समावेश किया गया है। सिद्धांतज्योतिष में यंत्र बनाने की तकनीक आचार्य पाठ्यक्रम में निर्धारित है। न्यायशास्त्र और गणित में साक्ष्य और अन्य वस्तुओं के विश्लेषण द्वारा परमाणु, ब्रह्मांड और भौतिक विज्ञान के अन्य विषयों का विश्लेषण, ज्योतिष में सिद्धांत पाठ्यक्रम और आधुनिक विज्ञान के सभी आविष्कारों के मूल में वैदिक साहित्य में कैसे निहित है, यह पाठ्यक्रम में अंतर्निहित है। जिस प्रकार ज्योतिष विषय के पाठ्यक्रम में सिद्धांतशिेामणि में आकृष्टशक्तिश्च मही तया यत् इस रूप में आकर्षण के सिद्धांत को तथा अनुलोमगतिर्नौस्थः के द्वारा आर्यभटीय में भूभ्रमण का सिद्धान्त वैज्ञानिकतया प्रतिादित किया गया जिसे आचार्य कक्षा के पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है।
- वेदनैरुक्तप्रक्रिया के अन्तर्गत आचार्यद्वितीयवर्ष में प्रथमप्रश्नपत्र में प्रायोगिक दृष्टि से गणितीय अनुप्रयोग हेतु शुल्बसूत्र का समावेश किया गया है । गणित के स्वतंत्र विषयक पाठ्यक्रम के साथ साथ शास्त्री में निर्धारित भास्कराचार्यविरचित विश्वप्रसिद्ध गणितीय ग्रन्थ लीलावती, बीजगणित को पाठ्यक्रम में विन्यस्त हैं जिनमें अंकविन्यास से प्रारम्भ कर त्रैराशिकादि गणितीय नियमों का समावेश किया गया हैं साथ ही में अवकलन, समाकलन, त्रैराशिक, लघुरिक्थ, त्रिकोणमिति, ज्यामिति, दशमलव पद्धति का निवेश भी तथा आधुनिक गणित

की दृष्टि से गतिविज्ञान एवं स्थिति विज्ञान के विषय भी पाठ्यांश में समाहित हैं । विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों के अनुसार छात्रों को गणित की विधि का ज्ञान प्रदान करने के साथ साथ ग्रहगणित कर विश्वस्तरीय दृक्सिद्धपंचाग का प्रकाशन भी करता है । गणित में अवकलन, समाकलन, गतिविज्ञान, भूभ्रमण, दीर्घवृत्त इत्यादि जैसे विषय आधुनिक गणित के विषय भी पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं ।

- विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों में मानव व्यवहार संबंधी विषयों का समावेश हैं। व्यवहार के विषय में क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? कैसे किया जाना चाहिए? कार्य से कैसे जुड़े रहें ? विषम परिस्थितियों में स्वभाव को स्थिर कैसे रख जाय?इस प्रकार मानव व्यवहार के विषय सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में अंतर्निहित हैं। शास्त्री स्तर पर वेद दर्शन आदि पाठ्यक्रमों में तेन त्यक्तेन भुंजीथाः, मा गृधः कस्यस्विद्धनम, को समायोजित किया गया है। उपनिषदों में कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत्समाः..... न कर्म लिप्यते नरः इत्यादि वचन तथा पुराण इतिहास पाठ्यक्रम में शास्त्री द्वितीय वर्ष के पंचम पत्र में वाल्मीकि रामायण और महाभारत के अंश समाहित हैं जहाँ आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेदिति इत्यादि के माध्यम से वृत्ति व्यवहार निर्दिष्ट है। नीतिशास्त्र के पाठ्यांश में परद्रव्येषु लोष्ठवदिति व्यवहार भारतीय विद्यासंस्कृति के पाठ्यांश श्रीमद-भगवद्गीता मानव जीवन में उत्साह एवं दृढता का संचार हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् और स्वस्वकर्मण्यभिरताः संसिद्धिं लभते नरः वाक्यांशों के मानव सवभाव को उन्नत बनाते हैं।
- ज्योतिष के आचार्यपाठ्यक्रम में निर्धारित समरांगणसूत्रधार और बृहत् संहिता नगर प्रबंधन और मंदिर प्रबंधन जैसे विषयों का पल्लवन करते हैं । इसी ग्रन्थ में भूगर्भ, रसायन, वृष्टि आदि विषय भी निहित हैं । मनोविज्ञान के विषयों को वेद में प्रतिपादित शिवसंकल्पसूक्त, समाजविज्ञान के सन्दर्भ में अभिज्ञानशांकुतल में अर्थो हि कन्या परकीय एव से सामाजिकदायित्वों का बोध, किरातार्जुनीय में सहसा विदधीत न क्रियाम् , अहो दुरन्ता बलवद् विरोधिता इत्यादि विषय समाजशास्त्र के विषय में चेतना इंगित करते हैं ।
- प्राचीन राजशास्त्र अर्थशास्त्र शास्त्री पाठ्यक्रम में निर्धारित में कौटिलीय अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, दंडनीति और कामन्दकनीति आदि ग्रन्थ विधि पर केन्द्रित हैं। किस प्रकार के कर्म के लिए किस प्रकार की नीति है इसका निदर्शन करने के उद्देश्य से पुराण के पाठ्यक्रम में वाल्मकीय रामायण और महाभारत ग्रन्थ हैं। धर्मशास्त्र में याज्ञवल्यस्मृति, मनुस्मृति और तुलनात्मक दर्शन में अर्थशास्त्र, विधिशास्त्र के पक्षों को इसी उद्देश्यों से समाहित किया गया है। पाठ्यक्रम में वास्तुशास्त्र के माध्यम से भैतिक प्रबंधन और श्रीमद्भगवद्गीताके माध्यम से जीवनप्रबन्धन की अवधारणा प्रतिफलित है । शास्त्रीय कक्षा में निर्धारित पाठ्यक्रमों में कादम्बरी, मृच्छकटिकम् शिशुपालवधम् छात्रों को समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मानवव्यवहार विज्ञान और प्रबंधन की शाखाओं में दक्षता प्रदान करता है। कुंडमंडप सिद्धि और वेधशाला विज्ञान जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से, पारंपरिक छात्रों को सीधे आधुनिक विषयों से अवगत कराया जाता है।

• अर्थशास्त्र विश्वविद्यालय के वैकल्पिक विषयों में से एक है। संस्कृत साहित्य के सभी पाठ्यक्रमों में अर्थशास्त्र और वानिकी के पहलुओं को शामिल किया गया है। राजशास्त्र के ग्रन्थ कौटिलीय अर्थशास्त्र में आर्थिक आदान-प्रदान एवं प्रबंधन विषय के व्यावहारिक पहलुओं का अध्ययन समाविष्ट है। फलिज्योतिष में आचार्य के प्रथम वर्ष के द्वितीयपत्र में वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत अर्थशास्त्र, प्रबन्धनशास्त्र तथा मानवव्यवहार के साथ साथ प्राकृतिक विज्ञान के पक्षों का समावेश तथा श्रीमद्भगवद्गीता में सामाजिक, प्रशासनिक और नैतिक प्रबंधन के अन्य विषय हैं जो शास्त्री और आचार्य स्तर पर तुलनात्मक दर्शन और वेदांत के पाठ्यक्रम में शामिल हैं। प्राचीन राजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रमों में कौटिलीय अर्थशास्त्र और समकालीन साहित्य से वर्तमान तक सभी प्रबंधन प्रणालियों, राजनीतिक नियामकों और आर्थिक सिद्धांतों का अध्ययन और अध्यापन करके छात्रों को सक्षम बनाया जाता है।

• शिक्षा नीति के अनुसार पाठ्यक्रम में संगणक अनिवार्यतया सम्मिलित किया गया है । व्याकरण पाठ्यक्रम पाणिनि सूत्रों के भाषायी अनुप्रयोग को सिखाता है। ज्योतिष पाठ्यक्रम में शास्त्री और आचार्य स्तर पर लीलावती, बीज, गणित, ताल और पुरीकथा से संबंधित विषय कंप्यूटर विज्ञान पर आधारित हैं। खगोल विज्ञान में उपकरणों के निर्माण की प्रक्रिया में संगणकीय पद्धति का उपयोग किया जाता है। शब्दकोशों और निरुक्तों के माध्यम से संस्कृत को आधुनिक भाषाविज्ञान और संगणक के साथ प्रयोगात्मक रूप से कैसे एकीकृत किया जाए, यह भी पाठ्यक्रम का अनिवार्य विषय है जिसके अन्तर्गत गोलपरिभाषा, यन्त्रसर्वस्व आदि पाठ्यांश समाहित हैं।

1.3.5Q$_1$M संस्थापाठ्यचर्यायाम् आधुनिकविषयाणां यथा इतिहासः भौतिकविज्ञानं, गणितीयविज्ञानानि, राजनीतिशास्त्रम्, शिक्षाशास्त्रं, समाजशास्त्रं, मनोविज्ञानं, मानवव्यवहारशास्त्रं, अर्थशास्त्रं, प्रबन्धनशास्त्रं, सङ्गणकीयं विज्ञानम् अनुप्रयोगश्च इत्यादीनाम् अधुनातनरूपेण सह संस्कृतज्ञानपरम्परायाम् एतत्सम्बद्धं यत्किमपि तथ्यं प्राप्यते तेन सह एतेषां भागोपभागरूपेण समावेशः वर्तते। अपि च एते अंशाःसंस्कृतगिरा पाठ्यमानाः वर्तन्ते।आधुनिकसंस्कृतसाहित्यस्यापि पाठ्यचर्यायां समावेशःस्यात्।

विश्वविद्यालयस्य शास्त्रसम्बद्धपाठ्यक्रमेषु स्वतंत्रतया अर्वाचीनविषयाः समाविष्टाः सन्ति । विशिष्य च संस्कृतशास्त्रीयग्रन्थेषु च अन्तर्विषयिणीं पद्धतिमनुसृत्य आधुनिकविषयाणां समावेशः विद्यते । यथा विकल्पीयविषयेषु विकल्पाः भाषाणामापि विकल्पाः छात्रेभ्यः प्रदत्ताः सन्ति -

- खवर्गीयविषयेषु विज्ञानविषयान्तर्गते तु अनिवार्यतया भौतिकविज्ञानस्य निवेशः शास्त्रिकक्षायां विद्यते तथैव संस्कृतज्ञानपरम्परायां तु न्यायदर्शनस्य शास्त्रिप्रथमवर्षीयपाठ्यक्रमे न्यायसिद्धान्तमंजरीग्रन्थे परमाणोः दार्शनिकं स्वरूपं च वैज्ञानिकतया पाठ्यते । सिद्धान्तज्योतिषे तु शास्त्रिकक्षायां अर्वाचीनं ज्यौतिषम् इति पाठ्यांशे खगोलीयभूगोलीयविषयाः छात्रेभ्यः पाठ्यन्ते । ज्योतिषविषयकपाठ्यक्रमे फलितज्योतिषे तु आचार्यप्रथमवर्षे तृतीयचतुर्थपत्रयोः बृहत्संहिता विद्यते यत्र भूगर्भ-जीव-धातु-रसायनादिविषयाणां निवेशः विद्यते । सिद्धान्तज्योतिषे

तु यन्त्रनिर्माणप्रविधिः आचार्यपाठ्यक्रमे निर्धारितो विद्यते । न्यायशास्त्रे प्रमाणादीनां पदार्थानां च विवेचनेन भौतिकविज्ञानविषयाणां परमाणुब्रह्माण्डादीनां विश्लेषणं ज्योतिषशास्त्रे च गणितफलितसिद्धान्तपाठ्यक्रमेषु आधुनिकविज्ञानस्य सर्वेषां आविष्काराणां मूलत्वं कथं वैदिकवाङमये निहितमिति पाठ्यचर्यायां सन्निविष्टो विद्यते। ज्योतिषविषयस्य पाठ्यक्रमे सिद्धान्तशिरोमणौ आकर्षणसिद्धान्तःप्रतिपादितः वर्तते तथैव आर्यभटीये भूभ्रमणसिद्धान्तः वैज्ञानिकरीत्या संकेतितः अस्ति यस्य निवेशः आचार्यकक्षायाः शास्त्रिकक्षायाश्च पाठ्यक्रमे वरीवर्ति ।

- गणितविषये तु स्वतन्त्रतया स्नातक-स्नातकोत्तरोपाधिकार्यक्रमः वर्तते यत्र गणितस्य प्राचीनार्वाचीनपक्षाणां निवेशः विद्याते । सिद्धान्तज्योतिषस्य पाठ्क्रमे लीलावती, बीजगणितम्, रेखागणितम्, प्रतिभाबोधकम् ,चापीयत्रिकोणमितिः, चलनकलनम्, दीर्घवृत्तलक्षणम्, गोलपरिभाषा, अवकलनम् प्रभृतिग्रन्थाः पाठ्यक्रमे समाविष्टास्सन्ति । शास्त्रिस्तरे फलिज्यौतिषे च सिद्धान्तज्यौतिषे सूर्यसिद्धान्ते सिद्धान्तशिरोमणौ च प्राचीनगणितीयरीत्या सर्वेषां विषयाणामध्ययनम् अध्यापनं च क्रियते । यथा भास्करप्रणीता सिद्धान्तशिरोमणिः छात्रान् खगोलीयं गणितं भौतिकं रासायनिकञ्च विज्ञानं बोधयति। पाठ्यक्रमे निर्धारितग्रन्थानुसारं सूर्यसिद्धान्तदृशा ग्रहगणितं विधाय पंचागमपि विश्वविद्यालयः प्रकाशयति गणितपद्धतिं च छात्रान् अवबोधयति । अवकलन-समाकलन-गतिविज्ञान-भूभ्रमण-दीर्घवृत्तप्रभृतयः विषयाः ज्यातिषीयपाठ्यक्रमे किं च स्वतन्त्रतया गणितविषयपाठ्यक्रमेपि निर्धारितास्सन्ति । वेदनैरूक्तप्रक्रियायाम प्रथमपत्रे शुल्बसूत्रे गणितीयनियमाः प्रस्फोटितास्सन्ति ।

- खवर्गीयविषयेषु राजनीतिविषयः विकल्पतया शास्त्रिकक्षायां निर्धारितो विद्यते , किं च शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्रविषयकः स्वतन्त्रतया स्नातक-स्नातकोत्तरोपाधिकार्यक्रमः विद्यते यत्र कौटिलीयार्थशास्त्रम्, कामन्दकीयनीतिसारप्रभृतयः राजनीतिविज्ञानसम्बद्धाः पाठ्यंशाः सम्बद्धास्सन्ति । पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च निर्धारितं विद्यते यत्र राजनीतिशास्त्रसम्बद्धाः विषयाः शास्त्रीयदृष्ट्या पाठ्यक्रमे अभिनिविष्टास्सन्ति ।

- तुलनात्मकधर्मदर्शनपाठ्यक्रमे च वैश्विकपरिप्रेक्ष्ये धर्मस्य राजनीतेश्च अध्ययनं क्रियते । राजनीतिविषये नीतिदर्शनम् इति विषयकं पंचमं पाठ्यपत्रं निर्धारितमस्ति । साहित्यविषयकपाठ्यक्रमे च शिशुपालवधम्, शिवराजविजयम्,कादम्बरी प्रभृतयः ग्रन्थाः शास्त्रिस्तरे निर्धारिताः यत्र राजनीतिविषयकं प्रबोधनं विद्यते ।

धर्मशास्त्रपाठ्यांशे च याावलक्यस्मृतिः,पारस्करगृह्यसूत्रम् प्रभृतयः पाठ्यांशाः राजनीतिविषयकदिग्दर्शकाः पक्षाः समाविष्टास्सन्ति ।

- शिक्षाशास्त्रविभागस्तु स्वतन्त्रतया विश्वविद्यालये विद्यते यत्र B.ed, M.ed प्रभृतयः उपाधयः प्रदीयन्ते । तत्र शिक्षासम्बन्धिनो विषयाः निर्धारितास्सन्ति। संस्कृतज्ञानपरम्परायां तु शास्त्रिकक्षायां वेदनैरूक्तप्रक्रियायाः प्रथवर्षीये पाठ्यक्रमे चतुर्थपत्रे पाणिनीयशिक्षा,याज्ञवल्क्यशिक्षा,नारदीयशिक्षा,माण्डूकीयशिक्षा च निर्धारिता विद्यते । एवमेव प्राचीनव्याकरणे आचार्यप्रथमे चतुर्थपत्रे पाणिनीयशिक्षा समाविष्टा विद्यते । साहित्ये धर्मशास्त्रे च शिक्षाविषयकाः पाठ्यांशाः समाविष्टास्सन्ति ।
- वैकल्पिकविषयेषु समाजशास्त्रं तु गृहीतं विद्यते एव किं वा संस्कृतसाहित्यस्य सर्वेषु पाठ्यक्रमेषु सामाजिकविषयाः निबद्धास्सन्ति । यथा शास्त्रिप्रथमवर्षे अनिवार्यतया प्रथमपत्रे अभिज्ञानशाकुंतलम् निहितमस्ति तत्र सर्वेषां सामाजिकदायित्वानां प्रबोधनं कृतमस्ति। धर्मशास्त्रे याज्ञवल्क्यस्मृतिः सामाजिकव्यवहारं बोधयति पुराणे श्रीमद्भगवद्गीतायां च वर्णव्यवस्थाविषये, दुर्गासप्तशत्यां भारतीयविद्यासंसकृतिविषये वेदचयनम् इति पाठ्यांशे विश्वेदेव-पुरूष-शिवसंकल्पसूक्तानां माध्यमेन सामाजिकं प्रबोधनं कृतं विद्यते ।
- मनोविज्ञानविषयाः सर्वत्र पाठ्यक्रमे गुम्फिताः सन्ति । तुलनात्मकधर्मदर्शने शास्त्रिप्रथमवर्षे मनोविज्ञानं सप्तमपत्ररूपेण निर्धारितमस्ति । गृहविज्ञाने च शास्त्रिद्वितीयवर्षे बालमोविज्ञानम्, शिक्षाशास्त्रे च शिक्षामनोविज्ञानम् , समाजशास्त्रं सामाजिकं मनोविाानं च पाठ्यते । संस्कृपाठ्यक्रमे भारतीयविद्यासंसकृतिविषये वेदचयनम् इति पाठ्यांशे विश्वेदेव-पुरूष-शिवसंकल्पसूक्तानां मनोवैज्ञानिकं महत्वं विद्यते । धर्मशास्त्रे व्यवहारमयूखः इति धर्मशास्त्रस्य आचार्यप्रथमवर्षस्य प्रथमपत्रे निर्धारितः विद्यते , तत्रापि व्यक्तेः मनोभावानां निरूपणं कृतमस्ति । दर्शने वेदान्ते तुलनात्मकधर्मदर्शने च प्रामाण्यवादवेदान्तसारप्रभृतयः ग्रन्थाः मनोविज्ञानविषयान् एवं व्यंजयन्ति । होरास्कन्धे च चिकित्सामनोविज्ञानपक्षाणामालम्बनं पाठ्यक्रमे कृतं विद्यते।
- विश्वविद्यालयस्य सर्वेषु पाठ्यक्रमेषु मानवव्यवहारशास्त्रस्य विषयाणामपि निवेशः वर्तते । वेद-धर्मशास्त्र-पौरोहित्य-दर्शन-साहित्यादिविषयेषु सर्वेपि विषयाः मानवव्यवहारसम्बद्धा एव । तत्र वेदान्तविषये शास्त्रिप्रथमवर्षे पंचमपत्रे ईशकेनकठादि-उपनिषदःनिर्धारिताः येषां मुख्यमुद्देश्यं मानवस्य चारित्रिकमुत्थानमेव । शास्त्रिद्वितीयवर्षे पुराणेतिहासे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणम्, महाभारतस्य अनुशासनपर्व निर्धारितं विद्यते । भारतीयविद्यासंस्कृतिपाठ्यक्रमे श्रीमद्भगवद्गीता सामाजिकवव्यवहारस्य कृते चतुर्वणसमभावं च व्यंजयति । तत्रैव राजशास्त्रे शास्त्रिद्वितीयवर्षे चतुर्थपत्रे शुक्रनीतिः निर्धारिता विद्यते । स्मृतिग्रन्थाः मनुस्मृति-आचारशुद्धिप्रभृतयः नीतिसम्बद्धाः पाठ्यंशाः मानवव्यवहारं पोषयन्ति । संस्कृतसाहित्यपाठ्यक्रमे च शिशुपालवध-अभिज्ञानशाकुन्तल-भर्तृहरिशतकानां निवेशः पाठ्यक्रमे मानवव्यवहारनीतिं विकासयति । धर्मदर्शनाविभागे तु यहूदी-ईसाई-इस्लामादीनधर्मविषयकं चिन्तनञ्च छात्रेभ्यो विज्ञाप्य तेषांमनसिसर्वधर्मसद्भावनायाः विकासः पाठ्यक्रमस्य लक्ष्यं विद्यते। धर्मशास्त्रे षोडशसंस्काराणां पुराणेतिहास पाठ्यक्रमे च आचार्यद्वितीयवर्षे द्वितीयपत्रे राजधर्मः इति पाठ्यांशः मानवव्यवहारपक्षमेव बोधयति ।

- विश्वविद्यालयस्य वैकल्पिकविषयेषु अर्थशास्त्रं विद्यत एव । तथापि संस्कृतसाहित्यस्य सर्वेषु पाठ्यक्रमेषु अर्थशास्त्रप्रबन्धनशास्त्रविषयकाः पक्षाः निबद्धास्सन्ति । राजशास्त्रे शास्त्रितृतीयवर्षे कौटिलीयार्थशास्त्रम् पाठयक्रमे निर्धारितमस्ति यत्र अर्थविनिमयस्य प्रबन्धनविषयस्य च प्रायोगिकपक्षाणामध्ययनं विधीयते । फलिज्योतिषे आचार्यप्रथमवर्षे द्वितीयपत्रे वास्तुशास्त्रस्य ग्रन्थः बृहद्वास्तुमाला विद्यते यत्र आवासीयप्रबन्धनस्य प्रबोधनं छात्रेषु विधीयते । श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थे तु सामाजिक-प्राशासनिक-नैतिकप्रबन्धनस्य विषयाः विद्यन्ते येषां निवेशः तुलनात्मकधर्मदर्शनपाठ्यक्रमे वेदान्तपाठ्यक्रमे च शास्त्रिस्तरे आचार्यस्तरे च निविष्टो विद्यते । अथ प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्रविषयकेषु पाठ्यक्रमेषुवैदिककालादरभ्य अद्यावधि सर्वेषां प्रबन्धतन्त्राणां राजनीतिनियामकानां अर्थशास्त्रीयसिद्धान्तानां च अध्ययनाध्यापनं कौटिलीयार्थशास्त्रम् समारभ्यवर्तमानकालिकानां साहित्यानां अध्यापनेन छात्राः दक्षाः भवन्ति।
- शिक्षानीत्यनुसारं अनिवार्यतया संगणकस्य निवेशः पाठ्यक्रमे विद्यते । शास्त्रिस्तरे विश्वविद्यालयस्य संस्कृतपाठ्यक्रमे संगणकीयाः विषयाः सन्ति, यथा व्याकरणपाठ्यक्रमे पाणिनीयसूत्राणां भाषाविज्ञानदृष्ट्या संगणकीयमनुप्रयोगः निर्धारितो विद्यते । ज्योतिषपाठ्यक्रमे शास्त्रिस्तरे आचार्यस्तरे च लीलावतीबीजगणितलघुरिक्थसम्बन्धिविषयाः संगणकीयविज्ञानाश्रिता एव । ज्योतिषे यन्त्रनिमार्णप्रक्रियायामपि संगणकीयः विधिरेव प्रयुज्यते । कोश-निरूक्तादिमाध्यमेन आधुनिकभाषाविज्ञानेन संगणकेन च संस्कृतभाषायाः कथं प्रायोगिकदृष्टया समन्वयः भवेदित्यपि पाठ्यचर्यायाः अनिवार्यविषयाः सन्ति।

विश्वविद्यालयद्वारा दीनदयालउपाध्यायकौशलकेन्द्रपक्षतः अपि प्राचीनशास्त्रीयविषयैः सह आधुनिकविषयाणां समावेशन आन्तरिकसज्जा- भाषादक्षता- कर्मकाण्ड ज्योतिषवास्तुशास्त्रीयपाठ्यक्रमाःसर्वसाधरणेभ्यः जिज्ञासुभ्यः प्रदीयन्ते। ।अथ एतेषां विषयाणां वैज्ञानिकपक्षाणां सर्वजनसुबोधाय ऑनलाईनसंस्कृताध्ययनकेन्द्रद्वारापि यत्नः विधीयते। तत्र दशसु विषयेषु **संस्कृतभाषा-कर्मकाण्ड-वास्तु-अर्चक-योग-ज्योतिषप्रभृतय:**पाठ्यक्रमाः सर्वजनाय समुपलब्धाः सन्ति। कुण्डमण्डपसिद्धिः वेधशालाविज्ञानादिपाठ्यांशमाध्यमेन पारम्परिकाः छात्रा साक्षात्तया आधुनिकविषयैः सह सम्पृक्ताः भवन्ति। पाणिनीयशिक्षा-याज्ञवल्क्यशिक्षा-नारदीयशिक्षादि ग्रन्थेभ्यः आधुनिकशिक्षाशास्त्रस्य ये खलु नियमकाः बिन्दवः सन्ति, तेषां स्फोरणं छात्रेषु विधीयते। साहित्यशास्त्रे च पाठ्यक्रमे महाकाव्यादीनां माध्यमेन लोककलानां परिपोषणं पुनश्च नाटकादीनाभभिमञ्चनेन छात्रेषु अभिनयकौशलविकासः पाठ्यक्रमेन सम्पाद्यते। कादम्बरी- मृच्छकटिकम् – शिशुपालवधम् इति शास्त्रिकक्षायां निर्धारितैः पाठ्यक्रमांशैः समाजशास्त्र- राजनीतिशास्त्र-मानवव्यवहारशास्त्र-प्रबन्धनादिविषये च दक्षता छात्रेषु उपपाद्यते।